दूलनदासजी की बानी

(जीवन-चरित्र सहित)

जिस में उन परम भक्त के चुने हुए पद और साखियाँ छपी हैं और फ़ुटनोट में गूढ़ शब्दों के अर्थ और संकेत दिये हैं।

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

दूसरी बार] [मूल्य ।)॥

Printed and Published at the Belvedere Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फ़ुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फ़ुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी वैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठा और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के वचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरज संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला में जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई है। उनके नाम और दाम सूची से, जो कि इस पुस्तक के अंत में छपी है देखिये। अभी हाल में कबीर बीजक और अनुराग सागर भी छापा गया है जिसका दाम क्रमशः ॥) और १) है।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

मई सन् १९२१ ई०

इलाहाबाद।

महात्मा दूलनदास जी का

जीवन-चरित्र

महात्मा दूलनदास जी के जीवन का प्रमाणिक वृत्तान्त भी कितने ही प्रसिद्ध साधों और भक्तों की भाँति नहीं मिलता। यह जगजीवन साहिब के गुरुमुख चेले थे जो थोड़े बरस अठ्ठारहवें शतक बिक्रमीय के पिछले भाग में और बिशेष काल तक उन्नीसवें शतक के अगले भाग में वर्त्तमान थे।

यह जाति के सोम-वंशी ठाकुर थे जिनका जन्म समेसी गाँव ज़िला लखनऊ में एक ज़मींदार के घर हुआ। जगजीवन साहिब से मौज़ा सरदहा में उपदेश लेने पर यह बहुत काल तक उनके संग कोटवा में रहे फिर ज़िला रायबरैली में धर्म्मे नाम का एक गाँव बसाया जहाँ आकर बिश्राम किया और बहुत काल तक परमार्थ का सदाव्रत बाँट कर चोला छोड़ा।

इन के चमत्कार की कथाओं में एक कथा यह प्रसिद्ध है कि बाराबंकी के उमापुर गाँव में एक साधू नेवलदासजी बिराजते थे जिन के पास एक मुसल्मान फ़क़ीर रहा करता था। एक दिन नेवलदासजी ने उस फ़क़ीर से कहा कि तेरे जीवन का कागज़ फटा ही चाहता है दस दिन और रह गये हैं। यह सुन कर फ़क़ीर ने सोचा कि इसी मीआद में जगजीवन साहिब की चौदहो गद्दियों और चारो पायों का दर्शन करलूँ, सो सिवाय महात्मा दूलनदास जी के पाये के, सब गद्दियों और तीन पायों के दर्शन किये तो सब ने नेवलदास जी साधू के वचन के सकारा, पर जब वह महात्मा दूलनदास जी के पास नवें दिन पहुँचा और हाल कह कर भभूत माँगी तो महात्माजी बोले कि नेवलदास ने मिथ्या नहीं कहा था परन्तु कागज़ तेरे "जीवन" का नहीं फटा है बरन तेरे दरिद्र का। फिर उसकी प्रार्थना पर उसे दूसरे दिन तक अपने चरनों में रहने की आज्ञा दी। जब मरने का दिन बीत गया तो वह फ़क़ीर ख़ुश ख़ुश

नेवलदास साधू के पास गया और अपना वृत्तान्त कहा जिस पर वह साधू हँस कर बोला कि दूलन दफ़्तर का मालिक है अपने सामर्थ से तेरे जीवन के काग़ज़ की जगह तेरे दरिद्र का कागज़ फाड़ दिया अब जा कर निश्शंक भजन में लग।

दूलनदास जी गृहस्थ आश्रम ही में रहे, ज़ाहिर में ज़मींदारी के काम को नहीं छोड़ा और यही मर्य्यादा जगजीवन साहिब के समस्त गद्दियों और पायों की है।

दूलनदास जी के पदों और साखियों के हम कई बरस से खोज में थे और कोटवा के गुरुधाम से बहुत जतन करके मँगाना चाहा परन्तु न मिले। थोड़े दिन हुए राजा पृथ्वीपाल सिंह साहिब रईस ज़िला बाराबंकी ने कृपा करके थोड़े से पद भेजे फिर ठाकुर गंगा बख़्श सिंह जी जमींदार मौज़ा टंडवा ज़िला फ़ैज़ाबाद ने विशेष शब्द अनुग्रह करके भेजे और कुछ और इधर उधर से इकट्ठा करके यह पुस्तक छापी जाती है। इन दोनों महाशयों को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं॥

इलाहाबाद,
अगहन, सम्वत १९७१ } अधम,
एडिटर, संतबानी पुस्तक-माला।

॥ सूचीपत्र ॥

	पृष्ठ
अ	
अइलेहु यहि देसवाँ	६
अब काहे भूलहु हो	६
अब तो अफसोस मिटा	१६
इ	
इस नगरी हम अमल न पाया	२६
ऐ	
ऐसा रंग रँगैहौं	१६
क	
कहत सो अहौं पुकारी	२१
काह कहौं कछु	१६
कोइ बिरला	२
च	
चलो चढ़ो मन यार	८
ज	
जग में जै दिन	११
जब गज अरध नाम	४
जागहु री मोरी सुरत पियारी	१७
जागु जागु आतमा	८
जो कोइ भक्ति किया चाहे	१०
जोगी चेति नगर में रहो रे	६
जोगी जोग जुगति नहिँ जाना	२५
ढ	
ढोलक मजीरा बाजते	२४
त	
तू काहे को जग में आया	७
तै राम राम भजु	११
द	
द्रुपदी राम कृस्न कहि टेरी	४
देख आयों मैं तो साईं की	६
देखे जे साहूकार हैं	२४
ध	
धन मोरी आज	१६
न	
नाम सुमिरु मन मुरख	१
नीक न लागे	२७
प	
पछितात क्या	६
प्रभु तुम किहेउ कृपा बरिआई	१५
प्रानी जपि ले	१०
पिया मिलन कब होइ	१८
पंखा चँवर मुरछल दुरैं	२२
ब	
बर जे अठारह बरन में	२३
बाजत नाम नौबति	३
बोल मनुआँ राम राम	७

पृष्ठ

भ

भक्तन नाम चरन २०
भजन करना है कर्रा काम २५
भजन करु संसय ना करु रे १२
भजेहु नाम मोरि लगन सुधारन ४

म

मन तुम रहौ चरनन लगे ८
मन रहि जा चरनन १२
मन राम भजन १२
मन चहि नाम की धुनि ३
मन सत्य नाम रट लाउ रे १

य

यह नइया डगमग २

र

रट लागि हिये रमई रमई १७
रसना राम नाम न लिया ५
रहु तोइँ राम नाम रटि लाइ २
रहु मन नाम की डोरि सँभारे २
राखे जटा जिन माथ में २३
राम तोरी माया १६
राम राम रटु १२

स

सत नाम तें लागी १७
साईं तेरे कारन १३
साईं तेरा गुन मर्म ५

पृष्ठ

साईं तेरो भजन १५
साईं दरस माँगौं तोर १३
साईं भजन ना करि जाय १४
साईं सुनहु विनती मोरि १४
साईं हो गरीब-निवाज १३
साहिब अपने पास हो २५
सुनहु दयाल मोहिँ अपनावहु १४
सुमिरौं मैं राम दूत हनुमान २६
सुरत बौरी काते निरमल ताग २५

ह

हमारे तो केवल नाम अधार २०
हुआ है मस्त मंसूरा १८

साखी

गुरु महिमा २८
नाम महिमा २९-३४
शब्द महिमा ३४
सन्तमत महिमा ३५
चितावनी ३५
उपदेश ३५-३६
विनय ३६
प्रेम ३६-३७
धीरज ३७
दासातन ३८
साधु महिमा ३८
फुटकल ३८-४०

दूलनदास जी

की

बानी

नाम महिमा ।

॥ शब्द १ ॥

नाम सुमिरु मन मुरख अनारी ।
छिन छिन आयू घटत जातु है, समुझि गहहु सत डोरि सँभारी ॥१॥
यह जीवन सुपने को लेखा, का भूलसि झूठी संसारी ।
अंत काल कोइ काम न अइहैं, मातु पिता सुत बंधू नारी ॥२॥
दिवस चारि को जगत सगाई, आखिर नाम सनेह करारी ॥
रसना सत्त नाम रटि लावहु, उघरि जाइ तोरि कपट किवारी ॥३॥
नाम कि डोरि पोढ़ि धरनीधरु, उलटि पवन चढ़ु गगन अटारी ।
तहँ सत साहिब अलख रूप वै, जन दूलन करु दरस विदारी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

मन सत्य नाम रट लाउ रे ॥ टेक ॥
राति माति रहु नाम रसायन, अवर सबहिं बिसराउ रे ॥१॥
त्रिकुटी तिरथ प्रेम जल पूरन, तहाँ सुरत अन्हवाउ रे ॥२॥
करि असनान होहु तुम निर्मल, दुरमति दूरि बहाउ रे ॥३॥
दूलनदास सनेह डोरि गहि, सुरति चरन लपटाउ रे ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

कोइ बिरला यहि बिधि नाम कहै ॥ टेक ॥
मंत्र अमोल नाम दुइ अच्छर, बिनु रसना रट लागि रहै ॥१॥
होठ न डोलै जीभ न बोलै, सूरत धरनि दिढ़ाइ गहै ॥२॥
दिन औ राति रहै सुधि लागी, यह माला यह सुमिरन है ॥३॥
जन दूलन सत गुरन बतायो, ताकी नाव पार निबहै ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

रहु मन नाम की डोरि सँभारे ।
धृग जीवन नर नाम भजन बिनु, सब गुन बृथा तुम्हारे ॥ १ ॥
पाँच पचीसो के मद माते, निस दिन साँझ सकारे ।
बंदी-छोर नाम सुमिरन बिनु, जन्म पदारथ हारे ॥ २ ॥
अजहुँ चेत करु हेत नाम तें, गज गनिका जिन्ह तारे ।
चाखि नाम रस मस्त मगन ह्वै, बैठहु गगन दुवारे ॥ ३ ॥
यह कलि काल उपाइ अवर नहिं, बनि है नाम पुकारे ।
जगजीवन साईं के चरनन, लागे दास दुलारे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

यह नइया डगमगि नाम बिना । छाइ ले सच्च नाम रटना ॥१॥
हुत उत भौजल अगम घना । अहै जरूर पार तरना ॥२॥
मैं निगुनी गुन एकौ नाहीं । माँझ धार नहिं कोउ अपना ॥३॥
दिहेउँ सीस सतगुरु चरना । नाम अधार है दुलन जना ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

रहु सोहं राम नाम रट लाई ।
काह रटहु तुम नाम अच्छर दुइ, जौनी बिधि रटि जाई ॥१॥
राम नाम तुम रटहु निरंतर, खोजु न जतन उपाई ।
जानि परत मोहिं भजन पंथ की, यही अरूझनि भाई ॥२॥

बालमीकि उलटा जप कीन्हेउ, भयौ सिद्ध सिधि पाई ।
सुवा पढ़ावत गनिका तारी, देखु नाम प्रभुताई ॥३॥
दूलनदास तू राम नाम रटु, सकल सबै बिसराई ।
सतगुरु साइँ जगजीवन के, रहु चरनन लपटाई ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

बाजत नाम नौबत्ति आजु ।
हूँ सावधान सुचित्त सीतल, सुनहु गैब अवाजु ॥१॥
सुख कंद अनहद नाद धुनि सुनि, दुख दुरित[1] क्रम भ्रम भाजु ।
सत लोक बरसो पानि धुनि, निर्बान यहि मन बाजु ॥२॥
ताेइँ चेतु चित दै प्रेम मगन, अनंद आरति साजु ।
घर राम आये जानि, भइनि[2] सनाथ बहुरा[3] राजु ॥३॥
जगजिवन सतगुरु कृपा पूरन, सुफल भे जन काजु ।
धनि भाग दूलन दास तेरे, भक्ति तिलक बिराजु ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

मन यहि नाम की धुनि लाउ ।
रटु निरंतर नाम केवल, अवर सब बिसराउ ॥ १ ॥
साधि सूरत आपनी, करि सुवा[4] सिखर[5] चढ़ाउ ।
पोषि प्रेम प्रतीत तेँ, कहि राम नाम पढ़ाउ ॥ २ ॥
नामही अनुरागु निसु दिन, नाम के गुन गाउ ।
बनी तो का अबहिँ, आगे और बनी बनाउ ॥ ३ ॥
जगजिवन सतगुरु बचन साचे, साच मन माँ लाउ ।
करु बास दूलनदास सत माँ, फिरि न यहि जग आ[illegible]

— [illegible] भागे । (२) हुई । (३) पलटा, लौटा । (४) तोता । (५

॥ शब्द ९ ॥

जब गज अरध नाम गुहरायो ।
जब लगि आवै दूसर अच्छर, तब लगि आपुहि धायो ॥१॥
पाँय पियादे भे करुनामय, गरुड़ासन बिसरायो ।
धाय गजंद गोद प्रभु लीन्हो, आपनि भक्ति दिढ़ायो ॥२॥
मीरा को बिष अमृत कीन्हो, बिमल सुजस जग छायो ।
नामदेव हित कारन प्रभु तुम, मिर्तक गाय जियायो ॥३॥
भक्त हेत तुम जुग जुग जन्मेउ, तुमहिं सदा यह भायो ॥
बलि बलि दूलनदास नाम की, नामहि ते चित लायो ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

द्रुपदी राम कृस्न कहि टेरी ।
सुनत द्वारिका तें उठि धायो, जानि आपनो चेरी ॥ १ ॥
रही लाज पछितात दुसासन, अंबर[1] लाग्यो ढेरी ।
हरि लीला अवलोक चकित चित, सकल सभा भुइँ हेरी[2] ॥२॥
हरि रखवार सामरथ जाके, मूल अचल तेहि केरी ।
कबहुँ न लागत तासि बाव तेहि, फिरत सुदरसन[3] फेरी ॥३
अब मोहिं आसा नाम सरन की, सीस चरन दियो तेरी ।
दूलनदास के साईं जगजीवन, इतनी बिनती मेरी ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

भजहु नाम मोरि लगन सुधारन,
पूरन ब्रह्म अखिल[4] जग कारन ॥ १ ॥
अर्ध नाम की सुरति करत मन,
करुना-कंद[5] गजंद-उबारन ॥ २ ॥
लाउ जिकिरि[6] रत फिकिरि फारक करु ।
नाम सदा जन संकट टारन ॥३॥

---

(१) कपड़ा । (२) ज़मीन की ओर देखना सोच का निशान है। (३) बिस्नु का चक्र । (४) पूरा । (५) दया के मूल । (६) सुमिरन ।

द्रुपदी लज्या के रखवारे,
जन प्रहलाद कि पैज सँभारन[1] ॥ ४ ॥
होहु निडर मन सुमिरि नाम अस,
सर्म रु कर्म कुअंक भिजारन[2] ॥ ५ ॥
दूलनदास के साईं जगजीवन,
दिहिन नाम आवागवन निवारन ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

रसना राम नाम न लिया ।
मनहिं ज्ञान बिचार गुरु के, चरन सीस न दिया ॥१॥
रक्त पानि समोइ कै, जिन्ह अजब जामा सिया ।
तेहि बिसारि गँवार काहे, रखत पाहन[3] हिया ॥ २ ॥
अहो अंध अचेत मुग्धा, समुझि काम न किया ।
अछत[4] नाम पियूष[5] पासहिं, मोह माहुर[6] पिया ॥३॥
गयो गर्भ बिनास काहे न, कौल कारन जिया ।
दूलन हरि की भक्ति बिनु, यह जिन्दगानी छिया ॥४॥

भेद का अंग

॥ शब्द १ ॥

साईं तेरो गुप्त मर्म हम जाना ।
कस करि कहौं बखानी ॥ टेक ॥
सतगुरु संत भेद मोहिं दीन्हा, जग से राखा छानी ।
निज घर का कोऊ खोज न कीन्हा, करम भरम अटकानी ॥१

(१) प्रह्लाद भक्त के राम नाम की टेक या प्रण को सँभालने वाले। (२) खोटे भ्रम (क्रिया) और कर्म के अंक को मेटने वाले। (३) पत्थर या मूरत पत्थर की। (४) अछत = मौजूद होते। (५) अमृत। (६) विष।

निज घर है वह अगम अपारा, जहँ बिराजै स्वामी।
ता के परे अलोक अनामी, जा का रूप न नामी ॥ २ ॥
ब्रह्म रूप धरि सृष्टि उपाई, आप रहा अलगानी।
वेद किताब की रचन रचाई, दस औतार धरानी ॥ ३ ॥
निज माता सीता सोइ राधा, निज पितु राम सुवामी।
दोउ मिलि जीवन बंद छुड़ाया, निज पद में दिया ठामी ॥४॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, निज सुत जक्त पठानी।
मुक्ति द्वार की कूँची दीन्ही, ता तें कुलुफ[1] खुलानी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

दूलन यह मत गुप्त है, प्रगट न करो बखान।
ऐसे राखु छिपाय मन, जस बिधवा औधान[2] ॥

॥ शब्द २ ॥

देख आयों मैं तो साईं की सेजरिया।
साईं की सेजरिया सतगुरु की डगरिया ॥ १ ॥
सबदहि ताला सबदहि कुंजी, शब्द की लगी है जँजिरिया ॥२॥
सबद ओढ़ना सबद बिछौना, सबद की चटक चुनरिया ॥३॥
सबद सरूपी स्वामी आप बिराजैं, सीस चरन में धरिया ॥४॥
दूलनदास भजु साईं जगजीवन, अगिन से अहँग उजरिया ५

चितावनी

॥ शब्द १ ॥

पछितास क्या दिन जात बीते, समुझ करु नर चेत रे।
संघ तेरे कंध सिर पर, काल डंका देत रे ॥ १ ॥
हुसियार ह्वै गुन गाव प्रभु के, ठाढ़ रहु गुरु खेत रे।
ताके रहे छूटै नहीं, जिमि राहु रवि ससि केत रे ॥ २ ॥

(१) ताला। (२) गर्भ, हमल।

जम द्वार तर सब पीसिगे, चर अचर निन्दक जेत रे।
नहिं पियत अमृत नाम रस, भरि त्रास सुरत सचेत रे ॥३
मद मोह महुवा दाख दुख, बिष का पियाला लेत रे।
जग नात गोत बिसारि सब, हर दम गुरू से हेत रे ॥ ४ ॥
सगली सुपन अपना वही, जिस रोज परत सँकेत रे।
अह आह सिरजनहार हरि, सतनाम भो जल सेत रे।
जन दुलन सतगुरु चरन बंदत, प्रेम प्रीति समेत रे ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

तू काहे को जग में आया, जो पै नाम से प्रीति न लाया रे ॥ टेक
तृष्ना काम सवाद घनेरे, मन से नहिं बिसराया।
भोग बिलास आस निस बासर, इत उत चित भरमाया रे ॥१
त्रिकुटी तिरथ प्रेम जल निर्मल, सुरत नहीं अन्हवाया।
दुर्मति करम मैल सब मन के, सुमिरि सुमिरि न छुड़ाया रे ॥२
कहँ से आये कहँ को जैहे, अंत खोज नहिं पाया।
उपजि उपजि के बिनसि गये सब, काल सबै जग खाया रे ३
कर सतसंग आपने अंतर, तजि तन मोह औ माया।
जन दूलन बलि बलि सतगुरु के, जिन मोहिं अलख लखाया रे ॥४॥

उपदेश का अंग।

॥ शब्द १ ॥

बोल मनुआँ राम राम ॥ टेक ॥

सत्त जपना और सुपना, जिक्र लावो अष्ट जाम ॥ १ ॥
समुझि बूझि बिचारि देखो, पिंड पिंजड़ा धूम धाम ॥ २ ॥
बालमीकि हवाल पूछो, जपत उलटा सिद्ध काम ॥ ३ ॥
दास दूलन आस प्रभु की, मुक्ति-करता सत्त नाम ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

राम नाम दुइ अच्छरै, रटै निरंतर कोय ।
दूलन दीपक बरि उठै, मन प्रतीति जो होय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

जागु जागु आतमा, पुरान दाग धोउ रे ।
कर्म दूर करु, कीच कास खोउ रे ॥ १ ॥
अपनी सुधि भूलि गई, और की क्या टोउ रे ।
सत्त बात झूठ करै, झूठ ही को गोउ रे[1] ॥ २ ॥
रहि बास जानि जानि, द्वार द्वार रोउ रे ।
सत्तर पानी साबुन का, प्रेम पानी भोउ[2] रे ॥ ३ ॥
दाग दाग धोय डारु, वाह वाह होउ रे ।
दूलन बेकूफ काम, गाफिल ह्वै न सोउ रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तुम रहो चरनन लगे ।
बिनु चरन कँवल सनेह, अवर बिधान सब डगमगे ॥१॥
बहु देह धरि धरि गये मरि मरि, जीव बिरले जगे ।
नर जनम उत्तम पाइ, चरन सनेह बिन सब ठगे ॥ २ ॥
का अन्न तजि पय पिये, का भुज दंड दँही दगे ।
का तजे घर घरनी[3] , जो चरन सनेह नाम न रँगे ॥३॥
जन दूलन सतगुरु चरन जानहु, हित सनेही सगे ।
धरि ध्यान लै सत सुरति संगम, रहहु छबि रस पगे ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

चलो चलो मन यार महल अपने ॥ टेक ॥
चौक चाँदनी तारे झलकैं, बरनत बनत न बात बने ॥१॥
हीरा रतन जड़ाव जड़े जहँ, सोभित कोटि निसान घने ॥२॥

---

(१) छिपा कर रखना, पकड़े रखना। (२) थोड़े पानी से भिँगाना। (३) स्त्री।

सुखमन पलँगा सहज बिछौना, सुख सोवो को करै मने[1] ॥३॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, को आवै यह जग सुपने ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जोगी चेत नगर में रहो रे ॥ टेक ॥
प्रेम रंग रस ओढ़ चदरिया, मन तसबीह[2] गहो रे ॥१॥
अन्तर लाओ नामहि की धुनि, करम भरम सब धो रे ॥२॥
सूरत साधि गहो सत मारग, भेद न प्रगट कहो रे ॥३॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, भवजल पार करो रे ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

अइलेहु यहि देसवाँ, मनुवाँ कै मइल धुवैतेहु ।
सतगुरु घाट काया के सौंदन, नाम साबुन लपटैतेहु ॥१॥
धोये मलहिँ मिटै कस कलिमल, दुबिधा दूरि बहैतेहु ।
ज्ञान बिचार ताहि करि धोबी, प्रेम कै पाट बनैतेहु ॥२॥
स्वारथ छाड़ि नाम आसा धरि, बिषय बिकार बहैतेहु ।
भ्रम तजि अगुन सगुन करि मन तेँ, भव सागर तरि जैतेहु ॥३
सुत तिय परिवारहिँ अरु धन तजि, इनके बस न भुलैतेहु ।
अनमिलना मिलना काहू से, हित अनहित न चिन्हैतेहु ॥४
चौरासी चित मोह बिसरतेहु, हरि पद नेह लगैतेहु ।
दूलनदास बंदगी गावै, बिना परिस्रम जैतेहु ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अब काहे भूलहु हो भाई, तूँ तो सतगुरु सबद समइलेहु ॥ टेक
ना प्रभु मिलिहै जोग जाप तेँ, ना पथरा के पूजे ।
ना प्रभु मिलिहै पउआँ पखारे, ना काया के भूँजे ॥ १ ॥

---

(१) कौन बरज सकता है। (२) माला।

दया धरम हिरदे में राखहु, घर में रहहु उदासी ।
आन के जिव आपन करि जानहु, तब मिलिहै अबिनासी ॥२
पढ़ि पढ़ि के पंडित सब थाके, मुलना पढ़ै कुराना ।
भस्म रमाइ के जोगिया भूले, उनहूँ मरम न जाना ॥ ३ ॥
जोग जाप तहिया से छाड़ल, छाड़ल तिरथ नहाना ।
दूलनदास बंदगी गावै, है यह पद निर्बाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रानी जपि ले तू सतनाम ॥ टेक ॥
मात पिता सुत कुटुम कबीला, यह नहिं आवैं काम ।
सब अपने स्वारथ के संगी, संग न चलै छदाम ॥ १ ॥
देना लेना जो कुछ होवै, करिले अपना काम ।
आगे हाट बजार न पावै, कोइ नहिं पावै ग्राम ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह ने, आन बिछाया दाम[1] ।
क्यौं मतवारा भया बावरे, भजन करो निःकाम ॥ ३ ॥
यह नर देही हाथ न आवै, चल तू अपने धाम ।
अब की चूक माफ नहिं होगी, दूलन अचल मुकाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

जो कोइ भक्ति किया चहे भाई ॥ टेक ॥
करि बैराग भसम करि गोला, सो तन मनहिं चढ़ाई ॥ १ ॥
ओढ़ि के बैठ अधिनता चादर, तज अभिमान बड़ाई ॥ २ ॥
प्रेम प्रतीत धरै इक तागा, सो रहै सुरत लगाई ॥ ३ ॥
गगन मँडल बिच अभरन[2] झलकत, क्यौं न सुरत मन लाई॥४
सेस सहस मुख निसु दिन बरनत, बेद कोटि गुन गाई ॥ ५ ॥
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, ढूँढ़त थाह न पाई ॥ ६ ॥

---

(१) जाल । (२) भूषन, जवाहिर ।

नानक नाम कबीर मता है, सो मोहिँ प्रगट जनाई ॥७॥
ध्रुव प्रह्लाद यही रस माते, सिव रहे ताड़ी लाई ॥८॥
गुरु की सेवा साध की संगत, निसु दिन बढ़त सवाई ॥९॥
दूलनदास नाम भज बन्दे, ठाढ़ काल पछिताई ॥१०॥

॥ शब्द १० ॥

जग में जै दिन है जिंदगानी ॥ टेक ॥
लाइ लेव चित्त गुरु के चरनन, आलस करहु न प्रानी ॥१॥
या देही का कौन भरोसा, उभसा[1] भाठा[2] पानी ॥२॥
उपजत मिटत बार नहिँ लागत, क्या मगरूर गुमानी ॥३॥
यह तो है करता की कुदरत, नाम तू ले पहिचानी ॥४॥
आज भलो भजने को औसर, काल की काहु न जानी ॥५॥
काहु के हाथ साथ कछु नाहीं, दुनियाँ है हैरानी ॥६॥
दूलनदास बिस्वास भजन करु, यहि है नाम निसानी ॥७॥

॥ शब्द ११ ॥

तैँ राम राम भजु राम रे, राम गरीब निवाज हो ॥टेक॥
राम कहे सुख पाइहो, सुफल होइ सब काज ।
परम सनेही राम जो, रामहिँ जन की लाज हो ॥ १ ॥
जनम दीन्ह है राम जी, राम करत प्रतिपाल ।
राम राम रट लाव रे, रामहिँ दीनदयाल हो ॥ २ ॥
मात पिता गुरु राम जी, रामहिँ जिन बिसराव ।
रहो भरोसे राम के, तैँ रामहिँ से चित्त चाव हो ॥३॥
घर बन निसु दिन राम जी, भक्तन के रखवार ।
दुखिया दूलनदास को रे, राम लगइहैँ पार हो ॥४॥

---

(१) बढ़ा । (२) घटा ।

॥ शब्द १२ ॥

राम राम रटु राम राम सुनु, मनुवाँ सुवा सलोना रे ॥टेक॥
तन हरियाले बदन[1] सुलाले, बोल अमोल सुहौना रे ॥१॥
सत्त तंत्र अरु सिद्ध मंत्र पढ़ु, सोई मृतक जियौना रे ॥२॥
सुबचन तेरे भौजल बेरे,[2] आवागमन मिटौना रे ॥३॥
दुलनदास के साईं जग जीवन, चरन सनेह दृढ़ौना रे ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

मन राम भजन रहु राजो रे ॥ टेक ॥
दुनियाँ दौलत काम न अइहै, मति भूलहु गज बाजी[3] रे ॥१
निसु दिन लगन लगी भगवानहिं, काह करै जम पाजी रे ॥२
तन मन मगन रहो सिधि साधो, अमर लोक सुधि साजी रे॥३
दुलनदास के साईं जगजीवन, हरि भक्तो कहि गाजी रे॥४

॥ शब्द १४ ॥

मन रहि जा चरनन सीस धरो, लागि रहै धुनि हरो हरो ॥१
तोहि समझावौं घरी घरी, कुमति बिपति तोरि जाइ टरो ॥२
पाँच पचीसो एक करो, पियहु दरस रस पेट भरो ॥ ३ ॥
हारे बहुत बहुत रखरो[4], चरन प्रोति बिन कछु न सरो ॥४॥
चरन प्रभाव जानु कुबरो[5], परसत गौतम नारि तरो[6] ॥५॥
साईं जगजीवन कृपा करो, जन दूलन परतीत परो ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ ॥

भजन करु संसै ना करु रे ॥ टेक ॥
सबद बिचारि खोजि ले मारग, चित तैं चेतहु वोहु घरु रे॥१
साईं मनसा फल के दाता, दृढ़ बिसवास हृदय धरु रे ॥२॥

---

(१) चिद्दरा। (२) बेड़ा, नाव। (३) हाथी घोड़ा। (४) थक कर। (५) कुबजा जिस की पीठ का कूब श्रीकृष्ण ने अपने चरण से सीधा किया। (६) गौतम की नारी अहिल्या जो सराप बस शिला बनी पड़ी थी और श्रीरामचंद्र के चरण लगाने से तरी।

अपने अंतर अधंर[1] डोरी, गहु तोहि काहुहिँ ना डरु रे ॥३॥
दुलनदास के साइँ जगजीवन, अब दै सीस चरन परु रे ।४॥

बिनय का अंग

॥ शब्द १ ॥

साइँ हो गरीब नेवाज ॥ टेक ॥
देखि तुम्हँ घिन लागत नाहीं, अपने सेवक के साज ॥१॥
मोहिं अस निलज न यहि जग कोऊ, तुम ऐसे प्रभु लाज जहाज ॥२॥
और कछू हम चाहित नाहीं तुम्हरे नाम चरन तैं काज ॥३॥
दूलनदास गरीब निवाजहु, साइँ जगजीवन महराज ॥४।

॥ शब्द २ ॥

साइँ दरस माँगौं तोर, आपनो जन जानि साइँ मान राखहु मोर ॥१॥
अपथ[2] पंथ न सूझि इत उत, प्रबल पाँचों चोर ।
भजन केहि बिधि करौं साइं, चलत नाहीं जोर ॥ २ ॥
नास लाइ दुरास[3] काहे, पतित, जन की दौर ।
बचन अवधि[4] अधार मेरे, आसरा नहिं और ॥ ३ ॥
हेरिये करि कृपा जन तन, ललित[5] लोचन कोर ।
दास दूलन सरन आयो, राम बंदी-छोर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साइँ तेरे कारन नैना भये बैरागी ।
तेरा सत दरसन चहौं, कछु और न माँगी ॥ १ ॥
निस बासर तेरे नाम की, अंतर धुनि जागी ।
फेरत हौं माला मनौं, अँसुवन झरि लागी ॥ २ ॥

(१) आकाश । (२) कुराह । (३) हटाते हो । (४) प्रतिज्ञा । (५) सुंदर, मोहनी ।

पलक तजी इत उक्ति तैं[1], मन माया त्यागो ।
दृष्टि सदा सत सनमुखी, दरसन अनुरागी ॥ ३ ॥
मदमाते राते मनौं, दाधे बिरह आगी ।
मिलु प्रभु दूलन दास के, करु परम सुभागी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुनहु दयाल मोहिं अपनावहु ॥ टेक ॥
जन मन लगन सुधारन साईं, मोरि लो तुमहिं बनावहु १
इत उत चित्त न जाइ हमारा, सूरत चरन कमल लपटावहु ॥२॥
तबहूं अब मैं दास तुम्हारा, अब जिनि बिसरौ जिनि बिसरावहु ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, हमहूं काँ भक्तन माँ लावहु ॥४

॥ शब्द ५ ॥

साईं सुनहु बिनती मोरि ॥ टेक ॥
बुधि बल सकल उपाय-हीन मैं, पाँयन परौं दोउ कर जोरि १
इत उत कतहूं जाइ न मनुवाँ, लागि रहै चरनन माँ डोरि ॥२
राखहु दासहिं पास आपने, कस को सकिहै तोरि ॥३॥
आपन जानि कै मेटहु मेरे, औगुन सब क्रम भ्रम खोरि[2] ॥४॥
केवल एक हितू तुम मेरे, दुनियाँ भरी लाख करोरि ॥५॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, माँगौं सत दरस निहोरि ॥६॥

॥ शब्द ६ ॥

साईं भजन ना करि जाइ ।
पाँच तसकर संग लागे, मोहिं हटकत[3] धाइ ॥ १ ॥
चहत मन सतसंग करनो, अधर बैठि न पाइ ।
चढ़त उतरत रहत छिन छिन, नाहिं तहँ ठहराइ ॥ २ ॥
कठिन फाँसी अहै जग की, लियो सबहिं बझाइ ।

(१) इधर अर्थात संसार की चतुरचता (उक्ति) की ओर से आँख मूँद ली।
(२) सराप (शाप), कसर। (३) रोकते हैं।

पास मन मनि नैन निकटहिँ, सत्य गयो भुलाइ ॥ ३ ॥
जगजिवन सतगुरु करहु दाया, चरन मन लपटाइ ।
दास दूलन बास सत माँ, सुरस नहिँ अलगाइ ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

साइँ तेरो भजन ना हम जाना, ता तेँ बार बार पछिताना ॥टेक॥
भजन करंते दास मलूका, नाम भजन जिन्ह जाना ।
दीनदयाल भक्त हितकारी, लैहो रे परवाना ॥ १ ॥
गोपी ग्वाल भजन कहि गोकुल, सुरपति इन्द्र रिसाना ।
दीनदयाल रसन की लज्या, छत्र गोवर्धन ताना ॥२[1] ॥
कुतबदीन भजि भयो औलिया, औ मनसूर दिवाना ।
तेरे नाम भजन के कारन, बलख तजा सुलताना ॥३॥
भजन बखानत सुनत सबद, इक भइ अवाज असमाना ।
दूलनदास भजन करि निर्भय, रहु चरनन लपटाना ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रभु तुम किहेउ कृपा बरियाईँ[2] ।
तुम कृपाल मैँ कृपा अलायक[3], समुझि निवज तेहु साइँ ॥१॥
कूकुर धोये होइ न बाछा[4], सजै न नोच निचाईं ।
बगुला होइ न मानस-बासी[5], बसहि जे बिषै सलाई ॥२॥
प्रभु सुभाउ अनुहारि चाहिये, पाय चरन सेवकाई[6] ।
गिरगिट पौरुष करै कहाँ लगि, दौरि कँड़ौरे[7] जाई ॥ ३ ॥

---

(१) जब गोकुल के वासियोँ ने इन्द्र की पुरातन पूजा श्रीकृष्ण के उपदेश से छोड़ कर कृष्ण को पूजा तो इन्द्र ने कोप करके मेघ को आज्ञा की कि घोर वर्षा करके गोकुल को जड़ से बहा दो। उस समय ब्रजवासियोँ ने श्री कृष्ण को टेरा जिन्होँ ने गोवर्द्धन पहाड़ को उँगली पर उठा कर छाया करली और ब्रज को बचा लिया। (२) ज़बरदस्ती। (३) नालायक़। (४) गऊ का बच्चा। (५) मान सरोवरवासी। (६) ईश्वर सरीखा स्वभाव बन जाय तब उसके चरनोँ मेँ बासा मिलै। (७) कंडा या उपले का ढ़ेर—मसल है "गिरगिटे कै दौड़ कँड़ौरे लै"।

अब नहिं बनत बनाये मेरे, कहत अहौं गुहराई ।
दुलनदास के साइँ जगजीवन समरथ लेहु बनाई ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

काह कहौं कछु कहि नहिं आवै ॥ टेक ॥
गुन बिहीन मैं बौरी बिचारी, पिय गुन देय तौ पिय गुन गावै ॥१॥
काहु क राखि लीन्ह चरनन तर, काहू को इत उत भरमावै॥२
भाग सुहाग हाथ उन्हीं के, रोये कोऊ राज न पावै ॥३॥
दुलनदास के साइँ जगजीवन, बिनती करि जन तुम्हँ सुनावै४

॥ शब्द १० ॥

राम तोरी माया नाचु नचावै ।
निसुबासर मेरा मनुआँ ब्याकुल, सुमिरन सुधि नहिं आवै॥१
जोरत तूरै[1] नेह सूत मेरा, निरवारत अरुझावै ।
केहि बिधि भजन करौं मोरे साहिब, बरबस मोहिं सतावै ॥२
सत सन्मुख थिर रहे न पावै, इत उत चितहिं डुलावै ।
आरत[2] पवरि[3] पुकारौं साहिब, जन फिरियादिहिं[4] पावै ॥३
थाकेउँ जन्म जन्म के नाचत, अब मोहिं नाच न भावै ।
दुलनदास के गुरु दयाल तुम, किरपहिं तँ बनि आवै ॥४॥

प्रेम का अंग

॥ शब्द १ ॥

धन मोरि आज सुहागिन घड़िया ॥ टेक ॥
आज मोरे अँगना सन्त चलि आये, कौन करौं मिहमनिया १
निहुरि निहुरि मैं अँगना बुहारौं, मातो मैं प्रेम लहरिया ॥२

---

(१) तोड़े । (२) दीन आधीन । (३) द्वारे पर । (४) नालिश की सुनवाई ।

भाव के भात प्रेम के फुलका, ज्ञान की दाल उतरिया ॥३॥
दुलनदास के साइँ जगजीवन, गुरु के चरन बलिहरिया ॥४

॥ शब्द २ ॥

जागु री मोरि सुरत पियारी ।
　　चरन कमल छवि झलक निहारी ॥ १ ॥
बिसरि जाइ दे यह संसारी ।
　　धरहु ध्यान मन ज्ञान बिचारी ॥ २ ॥
पाँच पचीसो दे झझकारी[1] ।
　　गहहु नाम की डोरि सँभारी ॥ ३ ॥
साईं जगजीवन अरज हमारी ।
　　दूलनदास को आस तुम्हारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सतनाम तेँ लागी अँखिया, मन परिगै जिकिर[2] जँजीर हो १
सखि नैना बरजे ना रहैं, अब ठिरे[3] जात वोहि तीर[4] हो ॥२
नाम सनेही बावरे, दृग भरि भरि आवत नीर हो ॥३॥
रस-मतवाले रस-मसे[5] , यहि लागी लगन गँभीर हो ॥४॥
सखि इस्क पिया से आसिकाँ, तजि दुनिया दौलत भीर[6] हो ५
सखि गोपीचन्दा भरथरी, सुलताना भयो फकीर हो ॥६
सखि दूलन का से कहै, यह अटपटि[7] प्रेम से पीर हो ॥७

॥ शब्द ४ ॥

रटि लागि हिये रमई रमई ॥ टेक ॥
गुरु अंतर डोरी पोढ़ि दई ।
　　नित बाढ़न लागी प्रीति नई ॥ १ ॥

(१) फटकार या डाँट। (२) स्मरण या सुमिरन । (३) विशेष शीतलता से जम जाने को "ठिरना" कहते हैं—प्रतिलिपि में "टरे" है जिसके अर्थ खिँचने के हैं । (४) पास । (५) रस में पगे। (६) प्रेमी जन जिन की प्रीति प्रीतम से लगी है उन्हें संसार और धन माल की चिन्ता नहीं रहती। (७) अड़बड़, अनोखी ।

जनि मानै बैर विरोध कोई ।
जग माँ जिंदगानी है थोरई[1] ॥ २ ॥
दुनियाँ दुचिताई भूलि गई ।
हम समुझि गरीबी राह लई ॥ ३ ॥
चरनाँ रज अंजन नैन दई ।
जन दूलन देखत राम-मई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

पिया मिलन कब होइ, अंदेसवा लागि रही । टेक ॥
जब लग तेल दिया में बाती, सूझ परै सब कोइ ।
जरिगा तेल निपटि गइ बाती, लै चलु लै चलु होइ ॥१॥
बिन गुरु मारग कौन बतावै, करिये कौन उपाय ।
बिना गुरू के माला फेरै, जनम अकारथ जाय ॥ २ ॥
सब संतन मिलि इक मत कीजै, चलिये पिय के देस ।
पिया मिलैं तो बड़े भाग से, नहिं तो कठिन कलेस ॥३॥
या जग ढूढ़ूँ वा जग ढूढ़ूँ, पाऊँ अपने पास ।
सब संतन के चरन बन्दगी, गावै दूलनदास ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हुआ है मस्त मंसूरा, चढ़ा सूली न छोड़ा हक़ ।
पुकारा इश्क़बाज़ों को, अहै मरना यही बरहक़ ॥१॥
जो बोले आशिक़ाँ यारों, हमारे दिल में है जो शक ।
अहै यह काम सूरौं का, लगाये पोर से अब तक ॥२॥
शम्सतबरेज़ की सीफ़त, जहाँ में ज़ाहिरा अब तक ।
निज़ामुद्दीन सुलताना, सभी मेटे दुनो के धक ॥३॥

(१) थोड़ी ही ।

निरख रहे नूर अल्लह का, रहे जीते रहे जब तक।
हुआ हाफ़िज़ दिवाना भो, भये ऐसे नहीं हर यक ॥४॥
सुना है इश्क़ मजनूँ का, लगी लैला कि रहती झक[१]।
जलाकर ख़ाक तन कीना, हुये वह भी उसी माफ़िक़ ॥५॥
दुलन जन को दिया मुरशिद, पियाला नाम का थकथक[२]।
वही है शाह जग जीवन, चमकता देखिये लक़ लक़[३] ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

अब तो अफ़सोस मिटा दिल का, दिलदार दीद में आया है।
संतौं की सुहबत में रहकर, हक़ हादी को सिर नाया है ॥१
उपदेश उग्र गहि सत्त नाम, सोइ अष्ट जाम धुनि लाया है।
मुरशिद की मेहर हुई यौं कर, मज़बूत जोश उपजाया है ॥२
हर वक्त तसौवर में सूरत, मूरत अंदर झलकाया है।
बूअली क़लंदर औ फ़रीद, तबरेज़ वही मत गाया है ॥ ३
कर सिद्दक़ सबूरी लामकान, अल्लाह अलख दरसाया है।
लखि जन दूलन जगजिवन पीर, महबूब मेरे मन भाया है।
ख़विन्द ख़ास ग़ैबी हुज़ूर, वह दिल अंदर में आया है ॥४

॥ शब्द ८ ॥

ऐसा रँग रँगैहौं, मैं तो मतवालिन होइहौं ॥ टेक ॥
भट्ठी अधर लगाइ, नाम की सोज[४] जगैहौं।
पौन सँभारि उलटि दै झौंका, करकट कुमति जलैहौं ॥१॥
गुरुमति लहन[५] सुरति भरि गागरि, नरिया नेह लगैहौं।
प्रेम नीर दै प्रीति पुचारी, यहि बिधि मदवा चुवैहौं ॥२॥

(१) जोश। (२) लबालब भरा हुआ। (३) नूरानी; चमचम। (४) सोज़ = तपन, बिरह। (५) जामन जिस से शराब का ख़मीर जल्द उठ आता है।

अमल अगारो नाम खुमारो, नैनन छबि निरतैहौं ।
दै चित चरन भयूँ सत सन्मुख, बहुरि न यहि जग ऐहौं ॥३॥
ह्वै रस मगन पियौं भर प्याला, माला नाम डोलैहौं ।
कह दूलन सतसाईं जगजीवन, पिउ मिलि प्यारी कहैहौं ॥४

करुणा का अंग ।

॥ शब्द १ ॥

हमारे तो केवल नाम अधार ।
पूरन काम नाम दुइ अच्छर, अंतर लागि रहै खुटकार ॥१।
दासन पास बसै निसु बासर, सोवत जागत कबहुँ न न्यार।
अरध नाम टेरत प्रभु धाये, आये तुरत गज गाढ़ निवार ॥२
जन मन-रंजन सब दुख-भंजन, सदा सहाय परम हित प्यार।
नाम पुकारत चीर बढ़ायो, द्रुपदी लज्या के रखवार ॥३
गौरि गणेस रु सेस रटत जेहिं, नारद सुक[1] सनकादि पुकार।
चारहुँ मुख जेहिं रटत बिधाता[2], मंत्र राज सिव मन सिंगार ४

॥ शब्द २ ॥

भक्तन नाम चरन धुनि लाई ॥ टेक ॥
चारिहु जुग गोहारि प्रभु लागे, जब दासन गोहराई ॥१॥
हिरनाकुस रावन अभिमानी, छिन माँ खाक मिलाई ॥२॥
अविचल भक्ति नाम की महिमा, कोऊ न सकत मिटाई ॥३॥
कोउ उसवार[3] न एको मानहु, दिन दिन की दिनताई ॥४॥
दुलनदास के साइँ जगजीवन, है सतनाम दुहाई ॥ ५ ॥

---

(१) सुकदेव। (२) ब्रह्मा। (३) संसय।

बिवेक ज्ञान ।

कहत सो अहैँ पुकारी । सुनिये साधो लेहु बिचारी ॥ १
सबद कहै परमाना । जिन्ह प्रतीत मन आना ॥ २ ॥
सबद कहै सो करई । बिन बूझे भ्रम माँ परई ॥ ३ ॥
सबद कहै बिस्तारा । सबदै सब घट उजियारा ॥ ४ ॥
सबद बूझि जेहि आई । सहजे माँ तिनहीं पाई ॥५॥
सहज समान न आना । सहजे मिलि कृवा निधाना ॥६॥
सहज भजन जो करई । सो भवसागर तरई ॥ ७ ॥
भवसागर अपरम्पारा । सूझत वार न पारा ॥ ८ ॥
रहै चरन सरनाई । तब भवसागर तरि जाई ॥ ९ ॥
भवसागर तरि पारा । तब भयो सबन तें न्यारा ॥१०॥
ह्वै न्यारा गुन गावै । तेहि गति कोउ न पावै ॥११॥
पदुम[1] पात्र ज्योँ नीरा । अस मन रहै तेहि तीरा ॥१२॥
मगन भयो मस्ताना । सो साधू भे निरबाना ॥१३॥
अब कछु कहा न जाई । कलि देखि कै कहौँ सुनाई ॥१४॥
बहु प्रपंच अधिकारा । जग जानि करत अपकारा ॥१५॥
असुभ कर्म सब करहीं । ते जाइ नर्क माँ परहीं ॥ १६ ॥
साध कि निंद्या करहीं । सो कबहूँ नहिं निस्तरहीं ॥१७॥
सत सबद कहत है बानी । सुखित जन अस्तुति आनी ॥१८॥
जिन्ह दियो संत काँ माथा । तेहि कीन्हेउ राम सनाथा ॥१९
सो नाहीं दुख पावै, जो सीस संत काँ नावै ॥२०॥
पंडित की पँडिताई । अब तिन्ह की कहौँ सुनाई ॥२१॥
वेद ग्रंथ पढ़ि भूले । मैं त्वैं करिकै फूले ॥२२॥

---

(१) कँवल ।

पंडित भला निमाना[1]। जिन्ह राम नाम पहिचाना ॥२३॥
कलिजुग के कवि ज्ञानी। कथहीं बहुत बखानी ॥ २४ ॥
अतवत ज्ञान कथाहीं। मन भजन करत है नाहीं ॥२५॥
जो रहहिँ नाम तेँ लीना। सो ज्ञानी परबीना ॥ २६ ॥
सो आहै सद ज्ञानी। जेहि सुरत चरन लपटानी ॥२७॥
सत्य ज्ञान सत सारा। जिन्ह के है नाम अधारा ॥ २८ ॥
भेष बहुत अधिकारी। मैँ तिन्ह की कहौँ पुकारी ॥ २९॥
अलख भेष बहु भेसा। ते भ्रमत फिरहिँ चहुँ देसा ॥३०॥
बहु गुमान अहंकारी। इन्ह डारेउ सकल बिसारी ॥३१॥
बहुत फिरहिँ गफिलाई[2]। करि आसा अरुझाई ॥ ३२ ॥
केहू तपस्या ठाना। कोइ नगन भयो निर्बाना ॥ ३३ ॥
कोइ तीरथ बहुत अन्हाई। कोइ कंद मूरि खनि[3] खाई ॥३४
केहु करि घौंचहिँ तूरा[4]। केहु सतगुरु मिल्यो न पूरा ॥३५॥
झूठे मुख अगिनि झकाही। कोइ ठाढ़े बैठे नाहीं ॥ ३६ ॥
भूले करि देखी देखा। है न्यारा नाम अलेखा ॥ ३७ ॥
कोटि तीरथ यह काया। तेहि अंत न केहू पाया ॥ ३८ ॥
पाँची जिन्ह घट जानी। जन दूलन सो निरबानी ॥३९॥
राम अच्छर जेहि माहीं। जग तेहि समान कोउ नाहीं ॥४०॥

झूलना।

(१)

पंखा चँवर सुवच्छल ढुरैँ, सूघा सबै खिजमति करैँ।
जरदपत का तंबू तन्यो, बैठक बन्यो मसनंद का ॥

---

(१) दीन, उत्तम। (२) ग़ाफ़िल। (३) खोद कर। (४) पद्मासन बैठकर प्राणों में चिबुक लगाना।

दिन राति झाँगरि बाजती, सुघरी सहेली नाचती ।
पिलसूज[1] आगे यों जलै, उजियार मानो चंद का ॥
एकै अतर चोवा चमेली, बेला खुसबोई लिये ।
एकै कटोरे में किये, सरबत सलोना कंद का ॥
हिन्दू तुरुक दुइ दीन आलम, आपनी ताबीन[2] में ।
यह भी न दूलन खूबहै, करु ध्यान दसरथ-नंद का ॥

(२)

बर[3] जे अठारह बरन में, बितपन्य[4] हैं ब्याकरन में ।
पहिरे खराऊँ चरन में, जानै न स्वाद सरीर का ।
कुस मुद्रिका कर राखते, जे देव-बानी भाखते ।
नहिं अन्न आमिष[5] चाखते, नित पान करते छीर का ॥
धोती उपरना अंग में, रत बेद बिद्या रंग में ।
बिद्यारथी बहु संग में, जिन बास तीरथ तीर का ।
सूतहिं सदा भुइँ सेज जे, पूरे तपस्या तेज के ।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान श्री रघुबीर का ॥

(३)

राखे जटा जिन्ह माथ में, बीभूति लाये गात में ।
तिरसूल तोंबी हाथ में, छोड़ेउ सकल सुख धाम का ॥
भावे जहाँ जावें तहाँ, पुर बीच में आवें नहीं ॥
रुद्राच्छ का माला गरे, आला बिछावन चाम का ॥
दसहूँ दिसा जिन्ह घूमि कै, कीन्हेउ प्रदच्छिन[6] भूमि कै ।
फिरि मौन होइ बैठेउ तज्यो, मजकूर दौलति दाम का[7] ॥

---

(१) पतील-सोज़ यानी चौमुखी दीवट । (२) तावेदारी । (३) श्रेष्ठ । (४) प्रवीन, कुशल । (५) माँस । (६) फेरी । (७) फिर मौन (चुप) साध कर बैठे और धन दौलत की चर्चा छोड़ दी ।

करि जोग देहीं जारते, हरतार पारा मारते ।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान स्यामा स्याम का ॥

(४)

देखे जे साहूकार हैं, करते सकल बैपार हैं ।
पूरा भरा भंडार है, कूबेर के सामान का ॥
सुथरी हवेली यों बनी, लागी जवाहर की कनी ।
आकाल छोड़ेउ देस जिन्ह की, देखि संपति सान[१] काँ ॥
सारा[२] जिन्हों की बात का, दरियाव के उस पार लौं ।
सो सक्स है नाहीं कहूँ, जो ना करे परमान काँ ॥
ऐसा बड़ा बिस्तार है, धन का न वारा पार है ।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान श्री भगवान का ॥

(५)

ढोलक मजीरा बाजते, तेहि बीच नाउत[४] गाजते ।
संध्या समय तें भोर लौं, करि जोर झिटकैं माथ कों ॥
अभुवात[५] हैं अभिमान तें, बारा हैं दिया जो पानि तें[६] ।
करि कोप मारें बान तें, बैताल भाजे साथ का ॥
करि आस आलम सेवता, बिस्वास कारे देव[७] का ।
सो धन्य माने आप कों, बीरा जो पावे हाथ का ॥
संसार की जादू पढ़े, मरजाद जाही से बढ़े ।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान श्री रघुनाथ का ॥

---

(१) शान=महिमा, प्रताप । (२) साख । (३) आदमी । ओझइत । (५) सिर हिलाते हैं जैसे भूत सिर पर आया हो । (६) ऐसी महिमा है कि उन का दीया तेल की जगह पानी में बलता है । (७) ओझइत काले देव की पूजा कराते हैं और उस पर सुअर का बच्चा और शराब चढ़वाते हैं ।

फुटकल ।

॥ शब्द १ ॥

साहिब अपने पास हो, कोइ दरद सुनावे ॥ टेक ॥

साहिब जल थल घट घट व्यापत, धरती पवन अकास हो। १
नीची अटरिया की ऊँची दुवरिया, दियना बरत अकास हो २
सखिया इक पैठी जल भीतर, रटत पियास पियास हो ॥३
मुख नहिं पिये चिरुआ नहिं पीयै, नैनन पियत हुलास हो४
साईं सरवर[1] साईं जगजीवन[2], चरनन दूलनदास हो ॥५

॥ शब्द २ ॥

भजन करना है कठिन काम ॥ टेक ॥

मोही भूले मोह के बस में, क्रोधी भूले पड़ि हंकार ॥१॥
कामी भूले काम अगिन में, लोभी भूले जोरत दाम ॥२॥
जोगी भूले जोग जुगत में, पंडित भूले पढ़त पुरान ॥३॥
दूलनदास ओही जन तरिगे, आठ पहर जिन सुमिरा नाम४

॥ शब्द ३ ॥

सुरत बौरी कातै निरमल ताग ॥ टेक ॥

तन का चरखा नाम का टेकुआ, प्रेम की पिउनी करि अनुराग१
सतगुरु धोबी अलख जुलाहा, मलिमलि धोवैं करम के दाग २
इतना पहिरि मन मानिक साजो, पिय अपने पर सबै सिंगार ३
दूलनदास अचल गुरु साहिब, गुरु के चरन पर मनुआँ लाग४

(१) तालाब, अधिष्ठाता। (२) जगत का आधार।

॥ शब्द ४ ॥

जोगी जोग जुगत नहिं जाना ॥ टेक ॥
गेरू घोरि रँगि कपरा जोगी, मन न रँगे गुरु ज्ञाना ॥१॥
पढ़ेहु न सत्त नाम दुइ अच्छर, सीखहु सो सकल सयाना २
साँची प्रीति हृदय बिनु उपजे, कहुँ रीभत भगवाना ॥३॥
दूलनदास के साइँ जगजीवन, मो मन दरस दिवाना ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

सुमिरौं मैं रामदूत हनुमान।
समरथ लायक जन सुख-दायक, कर मुसकिल औसान[1] ॥१॥
सील सुजस बल तेज अमित[2] जाके, छबि गुन ज्ञान निधान[3]।
भक्ति तिलक जा के सीस बिराजत, बाजत नाम निसान ॥२
जो कछु मो मन सोच होत तब, धरौं तुम्हारो ध्यान।
सब तुम निकटहिं अहो सहायक, कहँ लगि करौं बखान ॥३
रहौं असंक भरोस तुम्हारे, निस दिन साँझ बिहान।
दूलन दास के परम हितू तुम, पवन-तनय[4] बलवान ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

इस नगरी हम अमल न पाया ॥टेक॥
साहिब भेजा नाम तसीलन[5], एकौ फौज न संग पठाया।
आइ पड़े इस कठिन देस में, लूटन को सब मोहिं तकाया ॥१।
राजा तीन मनासिब[6] भारी, पाँच गढ़ी मजबूत बनाया।
तिसमें बसतेदस भट[7] भारी, तिन यह मुलुक जगीरिन्ह खाया२

(१) सहज। (२) बेहद। (३) खज़ाना। (४) पवन के पुत्र अर्थात हनुमान। (५) तहसील करने। (६) अधिकारी। (७) योधा।

अस सुघिरत[१] जब कतहुँ न देखा, धाय के सतगुरु सरन में आया
दीन जानि गुरु पाछे राखा, लड़ने की मोहिं जुगत बताया ३
दीन्हा तोप सलाखा[२] भारी, ज्ञान के गोला बरूत भराया।
सुरत पलीता दारि के मारा, टूटी गढ़ी फौज बिचलाया॥४
फौजदार मनुआँ ह्वै बैठा, जब थिर भये तो पकरि बुलाया।
पाँच पचीसो को बस करि के, नाम तसील खजाने आया॥५
साहिब पूर दीन दुनिया के, खबर पाय मोहिं बेग बुलाया।
दुलनदास के साईं जगजीवन, रीझि के भक्ति खिलत[३] पहिराया॥६

॥ शब्द ७ ॥

नीक न लागे बिनु भजन सिंगरवा ॥टेक॥
का कहि आयो हियाँ बरत्यो नाहीं, भूलि गयल तोरा कौल करारवा॥१
साचा रँग हिये उपजत नाहीं, भेष बनाय रँग लीन्हो कपरवा॥२
बिन रे भजन तोरी ई गति होइ है, बाँधल जैबे तू जम के दुवरवा॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, हरि के चरन पर हमरि लिलरवा॥४

॥ साखी ॥

गुरु महिमा

गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु हैं, गुरु संकर गुरु साध।
दूलन गुरु गोबिन्द भजु, गुरुमत अगम अगाध ॥ १ ॥
ब्रह्मा बिस्नु ता पर ढुरैं[1] ढुरो भवानी ईस।
दूलनदास दयाल गुरु, हाथ दीन्ह जेहिं सीस ॥ २ ॥
पति सनमुख सो पतिब्रता, रन सनमुख सो सूर।
दूलन सत सनमुख सदा, गुरुमुख गनी[2] सो पूर ॥ ३ ॥
सतगुरु साहिब जगजिवन, इच्छा फल के दानि।
राखहु दूलनदास की, सुरत चरन लपटानि ॥ ४ ॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, याँचै सतगुरु दानि।
राखहु सुरति हमारि दिढ़, चरन कँवल लपटानि ॥५॥
श्री सतगुरु मुख चन्द्र तें, सबद सुधा झरि लागि।
हृदय सरोवर राखु भरि, दूलन जागे भागि ॥ ६ ॥
सतगुरु तो मन माँ अहैं, जो मन लागै साथ।
दूलन चरन कमल गहि, दिहे रहो दिढ़ माथ ॥ ७ ॥
दुई पहिया के रथ चढ़ेउँ, गुरू सारथी मोर।
दूलन खेलत प्रेम पथ, आड़ि जक्त की झोर[3] ॥ ८ ॥
दूलन गुर तें बिषै बस, कपट करहि जे लोग।
निर्फल तिन की सेव है, निर्फल तिन का जोग ॥ ९ ॥
छठवाँ माया चक्र सोइ, अरुझानि गगन दुवार।
दूलन बिन सतगुरु मिले, बेधि जाय को पार ॥ १० ॥

(१) अनुकूल हों। (२) धनी, बेपरवाह। (३) झकझोर।

नाम महिमा ।

दुलनदास जिन के हृदय, नाम बास जो आय ।
अष्ट सिद्धि नौ निद्धि बिचारी, ताहि छाड़ि कहँ जाय ॥१॥
गावै सूरत सुन्दरी, बैठी सत अस्थान ।
जन दूलन मन मोहिनी, नाम सुरंगी तान ॥ २ ॥
दूलन यहि जग जनमि कै, हर दम रटना नाम ।
केवल नाम सनेह बिनु, जन्म समूह[1] हराम ॥ ३ ॥
स्वास पलक माँ नाम भजु, वृथा स्वास जिनि खोउ ।
दूलन ऐसी स्वास से, आवन होउ न होउ ॥ ४ ॥
स्वास पलक माँ जातु है, पलकहिँ माँ फिरि आउ ।
दूलन ऐसी स्वास से, सुमिरि सुमिरि रट लाउ ॥ ५ ॥
डौंडी[2] बाजै नाम की, बरन भेष की नाहिँ ।
दूलनदास बिचारि अस, नाम रटहु मन माहिँ ॥ ६ ॥
रसना रटि जेहि लागिगे, चाखि भयो मस्तान ।
दूलन पायो परम पद, निरखि भयो निर्बान ॥ ७ ॥
पैठेउँ मन होइ मरजिया, ढूँढ़ेउँ दिल दरियाउ ।
दूलन नाम रतन्न काँ, भागन कोउ जन पाउ ॥ ८ ॥
सुनत चिकार पिपील की, ताहि रटहु मन माहिँ ।
दुलनदास बिस्वास भजु, साहिब बहिरा नाहिँ ॥ ९ ॥
चितवन नीची ऊँच मन, नामहिँ जिकिर लगाय ।
दूलन सूझै परम पद, अंधकार मिटि जाय ॥ १० ॥

---

(१) समस्त । (२) ढिँढोरा ।

दूलन चाख्यो नाम रस, बिधि सिव मन आधार।
जन्म जन्म जेहि अमल को, लागो रहै खुमार ॥ ११

ताहि बाउ लागै नहीं, आठौ पहर अनंद।
दूलन नाम सनेह तें, दिन दिन दसा दुचंद ॥ १२ ॥

दूलन केवल नाम धुनि, हृदय निरंतर ठानु।
लागत लागत लागिहै, जानत जानत जानु ॥ १३ ॥

दूलन केवल नाम लै, तिन भेंटेउ जगदीस।
तन मन छाकेउ दरस रस, थाकेउ पाँच पचीस ॥ १४

सीतल हृदय सुचित्त होइ, तजि कुतर्क कुबिचार।
दूलन चरनन परि रहै, नाम कि करस पुकार ॥ १५ ॥

कर्मन दृष्टि मलीन भे, मैं त्वैं परिगा फेरु।
दूलन साईं फेरि मिलु, नाम निरंतर टेरु ॥ १६ ॥

गुरू बचन बिसरै नहीं, कबहुँ न टूटै डोरि।
पियत रहो सहजै दुलन, नाम रसायन घोरि ॥ १७ ॥

दुलन नाम पारस परसि, भयो लोह तें सोन।
कुन्दन होइ छवि रेसमी, बहुरि न लोहा होन ॥ १८ ॥

दुलन भरोसे नाम के, तन तकिया धरि धीर।
रहै गरीब यतीम[1] होइ, तिन काँ कही फकीर ॥ १९

अंध कूप संसार तें, सूरत आनहु फेरि।
चरन सरन बैठारि कै, दुलन नाम रहु टेरि ॥ २० ॥

सबही सत सुधि बुद्धि सब, सुभ गुन सकल सलूक।
दूलन जो सत नाम सँ, लाउ नेह निस्तूक[2] ॥ २१ ॥

---

(१) जिसके मा बाप मर गये हैं। पक्के तौर पर, निश्चय करके।

अरुझि अरुझि टूटी जुरत, निगुनी पाउ सलूक[1]।
दूलन ऐसे नाम तें, लाउ नेह निस्तूक ॥ २२ ॥
रटत कटत अघ क्रम फटत, भ्रम तम मिटु सब चूः
दूलन ऐसे नाम तें, लाउ नेह निस्तूक ॥ २३ ॥
अन्ध तकत बहिरे सुनत, धुनत बेद को मूक[2]।
दूलन ऐसे नाम तें, लाउ नेह निस्तूक ॥ २४ ॥
बिपति सनेही मीत सो, नोति सनेही राउ ।
दूलन नाम सनेह दृढ़, सोई भक्त कहाउ ॥ २५ ॥
सुरपति नरपति नागपति, तीनिउँ तिलक लिलार ।
दूलन नाम सनेह बिनु, ध्रिग जीवन संसार ॥ २६ ॥
यहि कलि काल कुचाल तकि, आयो भागि डेराइ ।
दूलन चरनन परि रहे, नाम की रटनि लगाइ ॥ २७ ॥
दूलन नाम रस चाखि सोइ, पुष्ट पुरुष परबीन ।
जिन के नाम हृदय नहीं, भये ते हिजरा हीन ॥ २८ ॥
मरने की हेर छोड़ि कै, नाम भजो मन माहिँ ।
दूलन यहि जग जनमि कै, कोउ अमर है नाहिँ ॥ २९ ॥
नामी लोग सबै बड़े, काको कहिये छोट ।
सब हित दूलनदास जिन, लीन्ह नाम की ओट ॥३०॥
दूलन चरनन सीस दै, नाम रटहु मन माहँ ।
सदा सर्बदा जनम भरि, जा तें खैर सलाह ॥ ३१ ॥
नाम पुकारत राम जी, लागहिँ भक्त गुहारि ।
दूलन नाम सनेह की, गहि रहु डोरि सँभारि ॥ ३२ ॥

---

(१) सत्कार। (२) बहिरे।

दुलन नाम आसा सदा, जगत आस दियो त्यागि ।
छूटै कैसे दास जी, हम तें तुम तें लागि ॥ ३३ ॥
कृपा कंठ उर बैठि कै, त्रिकुटी चिता बनाय ।
नाम अछर दुइ रगरि कै, पावक लेहु जगाय ॥ ३४ ॥
नाम अछर दुइ रटहु मन, करि चरनन तर बास ।
जन दूलन लौलीन रहु, कबहुँ न होहु उदास ॥ ३५ ॥
राम नाम दुइ अच्छरै, रटै निरंतर कोइ ।
दूलन दीपक बरि उठै, मन परतीत जो होइ ॥ ३६ ॥
नाम हृदय बिनु का कियो, कोटिन कपट कलाम ।
दूलन देखत पास हीं, अंतरजामी राम ॥ ३७ ॥
हम चाकर सतनाम के, भक्ति चाकरी हेत ।
दूलन दाता रामजी, मन इच्छा फल देत ॥ ३८ ॥
तीनिउँ करता लोक के, इहाँ उहाँ के राम ।
दूलन चरनन सीस दै, रटत रहैा वह नाम ॥ ३९ ॥
सुरत कलम हिय कागद, मसि करु सहज सनेह ।
दूलनदास बिस्वास करि, राम नाम लिखि लेह ॥ ४० ॥
दूलन दाता रामजी, सब काँ देत अहार ।
कैसे दास बिसारि हैं, आनहु मन इतिबार ॥ ४१ ॥
दुखित बिभीषन जानि कै, दीन्हेउ राज अजीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४२ ॥
पाँडव सुत हित कारने, कियो हुतासन[1] सीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४३ ॥

---

(१) महाभारत में कथा है कि पाँडवों के अपनी राज गद्दी का काँटा समझ कर दुर्योधन ने धोखा देकर उन्हें उनकी माता कुन्ती सहित वारणावत नगर

प्रन पालेउ प्रहलाद को, प्रगटेउ प्रेम प्रतीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४४ ॥
जहर पान मीरैं कियो, नेकु न लाग्यो तीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥४५॥
संकठ में साथी भयो, हाथी जानि सभीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े की मीत ॥४६॥
चारा पील पिपील को, जो पहुँचावत रोज ।
दूलन ऐसे नाम की, कीन्ह चाहिये खोज ॥४७॥
भूप एक भुवनेस्वर, रामचंद्र महराज ।
दूलन और केतानि को, राज तिलक जेहिं छाज ॥४८॥
इत उत की लज्या तुम्हैं, रामराय सिर मौर ।
दूलन चरनन लगि रहे, राखि भरोसा तोर ॥४९॥
कबहीं अरथो पारसो, पढ़यो द्रौपदी जाइ ।
दूलन लज्या रामजी, लीन्हैं चीर बढ़ाइ ॥ ५० ॥
कबहिं पराकृत संसकृत, पढ़ि कियो पील पुकारि
दूलन लज्या रामजी, लीन्हैं ताहि उबारि ॥ ५१ ॥
चाहिये सो करि है सरम, साईं तेरे दस्त ।
बाँध्यो चरन सनेह मन, दुलनदास रस मस्त ॥५२॥

को भेज दिया जहाँ एक महल लाह का अपने मंत्री पुरोचन के द्वारा बनवा रक्खा था इस मतलब से कि उस में पांडवों को टिकावें और जब अवसर मिले आग लगा दें कि वहीं सब जल भुन कर मर जायँ परंतु उन के ईश्वर भक्त चचा विदुरजी को यह बात मालूम हो गई सो उन्होंने युधिष्ठिर को चेता कर एक सुरंग उस महल में रात को इस तरह की खुदवा दी कि पांडव आप महल मे आग लगा कर उस की राह से कुन्ती सहित निकल भागे और दुष्ट पुरोचन उस लाह के मन्दिर में जल गया ।

तुला रासि तीनिउँ सदा, जा को मन इक ठौर ।[1]
दास पियारे भक्ति सोइ, दूलन के सिर-मौर ॥ ५३ ॥

दूलन एक गरीब के, हरि से हितू न और ।
ज्यौं जहाज के काग को, सूझै और न ठौर ॥ ५४ ॥

त्रिभुवन करता रामजी, दास तुम्हार कहाइ ।
तुम्हैं छाड़ि दूलन कहौ, केहि काँ याँचन जाइ ॥ ५५ ॥

राम नाम दीपक सिखा, दूलन दिल ठहराय ।
करम बिचारे सलभ[2] से, जरहिं उड़ाय उड़ाय ॥ ५६ ॥

शब्द महिमा ।

सूर चन्द नहिं रैन दिन, नहिं तहँ साँझ बिहान ।
उठत सब्द धुनि सुन्य माँ, जन दूलन अस्थान ॥ १ ॥

जगजीवन के चरन मन, जन दूलन आधार ।
निसु दिन बाजै बाँसुरी, सत्य सब्द झनकार ॥ २ ॥

चरचा बाद बिबाद की, संगति दीन्हेउ त्यागि ।
दूलन माते अधर धुनि, भक्ति खुमारी[3] लागि ॥ ३ ॥

कोउ सुनै राग रु रागिनी, कोउ सुनै कथा पुरान ।
जन दूलन अब का सुनै, जिन सुनी मुरलिया तान ॥ ४ ॥

सब्दै नानक नामदेव, सब्दै दास कबीर ।
सब्दै दूलन जगजिवन, सब्दै गुरु अरु पीर ॥ ५ ॥

---

(१) जिस का मन एक ठौर अर्थात् स्थिर है उस के तराजू की तीनों डोरियाँ सदा एक सम और नथी हैं, भाव त्रिगुन का वेग नहीं व्यापता। (२) पतंगा। (३) नशा।

सत मत महिमा।

दूलन यह मत गुप्त है, प्रगट न करौ बखान।
ऐसे राखु छिपाइ मन, जस बिधवा औधान[1] ॥ १ ॥
रीझि सबद सो भींजि रस, मत माते गलतान।
दूलन भागन भक्त कोइ, ठहराने अस्थान ॥ २ ॥
सूचे सोइ ऊँचे दुहुन, चहुँ दिसि देखि बिचारि
दूलन चाखा आइ जिन्ह, यह रस ऊख हमारि ॥ ३ ॥

चितावनी।

दूलन यह परिवार सब, नदी नाव संजोग।
उतरि परे जहँ तहँ चले, सबै बटाऊ लोग ॥ १ ॥
दूलन यहि जग आइ के, का को रहा दिमाक[2]।
चंद रोज को जीवना, आखिर होना खाक ॥ २ ॥
दूलन काया कबर है, कहँ लगि करौं बखान।
जीवत मनुआँ मरि रहै, फिरि यहि कबर समान ॥ ३ ॥

उपदेश।

बंधन सकल छुड़ाय करि, चित चरनन तें बाँधु।
दूलनदास बिस्वास करि, साइँ काँ आराधु ॥ १ ॥
ज्ञानी जानहिं ज्ञान बिधि, मैं बालक अज्ञान।
दूलन भजु बिस्वास मन, धुरपुर बाजु निसान ॥ २ ॥

---

(१) गर्भ, हमल। (२) दिमाग़ =घमंड।

दूलन बिरवा प्रेम को, जामेउ जेहि घट माहिं ।
पाँच पचीसौ थकित भे, तेहि तरवर की छाहिं ॥ ३ ॥
जग्य दान तप तीर्थ व्रत, धर्म जे दूलनदास ।
भक्ति-आसरित तप सबै, भक्ति न केहु की आस ॥ ४ ॥
दुलन तिरथ तप दान तें, और पाप मिटि जाइ ।
भक्त-द्रोह अघ ना मिटै, करै जे कोटि उपाय ॥ ५ ॥
पेट ठठावहिं स्वास गहि, मूँदहिं दसहुँ दुवार ।
दूलन रीझै न प्रेम बिनु, सत्त नाम करतार ॥ ६ ॥
धृग तन धृग मन धृग जनम, धृग जीवन जग माहिं ।
दूलन प्रीति लगाय जिन्ह, ओर निबाही नाहिं ॥ ७ ॥
प्रेम पियारे पाहुना, दूलन ढूँढ़त ताहि ।
मोल महँग दूलन दरस, भक्त सोई जग माहिं ॥ ८ ॥
समरथ दूलनदास के, आस तोष[1] तुम राम ।
तुम्हरे चरनन सीस दै, रटौं तुम्हारो नाम ॥ ९ ॥
सरबस दूलनदास के, केवल नाम प्रसाद ।
महतस सिधि औ सर्ब सुभ, सुफल आदि औलाद ॥१०॥

धीरज ।

दूलन सतगुरु मत कहै, धीरज बिना न ज्ञान ।
निरफल जोग सँतोष बिन, कहैं सब्द परमान ॥ १ ॥
दूलन धीरज खंभ कहँ, जिकिरि बड़ेरा लाइ ।
सूरत डोरी पोढ़ि करि, पाँच पचीस झुलाइ ॥ २ ॥

---

(१) आनंद ।

आपनि सूरत दृढ़ करै, मन मूरति के पास ।
राजी रहै रजाइ पर, सोई दूलनदास ॥ ३ ॥
बिहबल बिकल मलीन मन, डगमग कृत जंजाल ।
सब कर औषधि एक यह, दूलन मिलि रहु हाल ॥४॥
दूलन चरनन लागि रहु, नाम की करत पुकार ।
भक्ति सुधारस पेट भरु, का दहुँ लिखा लिलार ॥५॥
जग रहु जग तेँ अलग रहु, जोग जुगुत की रीति ।
दूलन हिरदे नाम तेँ, लाइ रहौ दृढ़ प्रीति ॥६॥

बिनय ।

साईं तेरी सरन हैाँ, अब की मोहिँ निवाज ।
दूलन के प्रभु राखिये, यहि बाना की लाज ॥ १ ॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, बिनती सुनहु हमारि ।
हे सखि मोहिँ बसाइ दे, साईं के अनुहारि ॥ २ ॥
इत उत की लज्या तुम्हैँ, रामराय सिर मौर ।
दूलन चरनन लगि रहै, राखि भरोसा तोर ॥ ३ ॥

प्रेम ।

दूलन सत मनि छबि लहौ, निरखि चरन धरि सीस ।
लागि प्रेम रस मस्त ह्वै, थाके पाँच पचीस ॥ १ ॥
दुलन कृपा तेँ पाइये, भक्ति न हाँसी ख्याल ।
काहू पाई सहज हीँ, कोउ ढूँढ़त फिरत बिहाल ॥ २ ॥

दूलन बिरवा प्रेम को, जामेउ जेहि घट माहिँ ।
पाँच पचीसो थकित भे, तेहि तरवर की छाहिँ ॥ ३ ॥

जग्य दान तप तीर्थ ब्रत, धर्म जे दूलनदास ।
भक्ति-आसरित तप सबै, भक्ति न केहु की आस ॥ ४ ॥

दुलन तिरथ तप दान तेँ, और पाप मिटि जाइ ।
भक्त-द्रोह अघ ना मिटै, करै जे कोटि उपाय ॥ ५ ॥

पेट ठठावहिँ स्वास गहि, मूँदहिँ दसहुँ दुवार ।
दूलन रीझै न प्रेम बिनु, सत्त नाम करतार ॥ ६ ॥

धृग तन धृग मन धृग जनम, धृग जीवन जग माहिँ ।
दूलन प्रीति लगाय जिन्ह, ओर निबाही नाहिँ ॥ ७ ॥

प्रेम पियारे पाहुना, दूलन ढूँढ़त ताहि ।
मोल महँग दूलन दरस, भक्त सोई जग माहिँ ॥ ८ ॥

समरथ दूलनदास के, आस तोष[१] तुम राम ।
तुम्हरे चरनन सीस दै, रटौँ तुम्हारो नाम ॥ ९ ॥

सरबस दूलनदास के, केवल नाम प्रसाद ।
महतम सिधि औ सर्ब सुभ, सुफल आदि औलाद ॥१०॥

धीरज ।

दूलन सतगुरु मत कहै, धीरज बिना न ज्ञान ।
निरफल जोग सँतोष बिन, कहैँ सब्द परमान ॥ १ ॥

दूलन धीरज खंभ कहँ, जिकिरि बड़ेरा लाइ ।
सूरत डोरी पोढ़ि करि, पाँच पचीस झुलाइ ॥ २ ॥

---

(१) आनंद ।

आपनि सूरत दृढ़ करै, मन मूरति के पास ।
राजी रहै रजाइ पर, सोई दूलनदास ॥ ३ ॥
बिह्बल बिकल मलीन मन, डगमग कृत जंजाल ।
सब कर औषधि एक यह, दूलन मिलि रहु हाल ॥४॥
दूलन चरनन लागि रहु, नाम की करत पुकार ।
भक्ति सुधारस पेट भरु, का दहुँ लिखा लिलार ॥५॥
जग रहु जग तेँ अलग रहु, जोग जुगुत की रीति ।
दूलन हिरदे नाम तेँ, लाइ रहौ दृढ़ प्रीति ॥६॥

बिनय ।

साईं तेरी सरन हौं, अब की मोहिँ निवाज ।
दूलन के प्रभु राखिये, यहि बाना की लाज ॥ १ ॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, बिनती सुनहु हमारि ।
हे सखि मोहिँ बसाइ दे, साईं कै अनुहारि ॥ २ ॥
इत उत की लज्या तुम्हैं, रामराय सिर मौर ।
दूलन चरनन लगि रहै, राखि भरोसा तोर ॥ ३ ॥

प्रेम ।

दूलन सत मनि छबि लहौ, निरखि चरन धरि सीस
लागि प्रेम रस मस्त ह्वै, थाके पाँच पचीस ॥ १ ॥
दुलन कृपा तेँ पाइये, भक्ति न हाँसी ख्याल ।
काहू पाई सहज हीं, कोउ ढूँढ़त फिरत बिहाल ॥ २

दूलन बिरवा प्रेम को, जामेउ जेहि घट माहिँ ।
पाँच पचीसौ थकित भे, तेहि तरवर की छाहिँ ॥ ३ ॥

जग्य दान तप तीर्थ ब्रत, धर्म जे दूलनदास ।
भक्ति-आसरित तप सबै, भक्ति न केहु को आस ॥ ४ ॥

दुलन तिरथ तप दान तेँ, और पाप मिटि जाइ ।
भक्त-द्रोह अघ ना मिटै, करै जे कोटि उपाय ॥ ५ ॥

पेट ठठावहिँ स्वास गहि, मूँदहिँ दसहुँ दुवार ।
दूलन रीझै न प्रेम बिनु, सत्त नाम करतार ॥ ६ ॥

धृग तन धृग मन धृग जनम, धृग जीवन जग माहिँ ।
दूलन प्रीति लगाय जिन्ह, ओर निबाही नाहिँ ॥ ७ ॥

प्रेम पियारे पाहुना, दूलन ढूँढ़त ताहि ।
मोल महँग दूलन दरस, भक्त सोई जग माहिँ ॥ ८ ॥

समरथ दूलनदास के, आस तोष[१] तुम राम ।
तुम्हरे चरनन सीस दै, रटौं तुम्हारो नाम ॥ ९ ॥

सरबस दूलनदास के, केवल नाम प्रसाद ।
महतत सिधि ओ सर्ब सुभ, सुफल आदि औलाद ॥१०॥

धीरज ।

दूलन सतगुरु मत कहै, धीरज बिना न ज्ञान ।
निरफल जोग सँतोष बिन, कहौँ सबद परमान ॥ १ ॥

दूलन धीरज खंभ कहँ, जिकिरि बड़ेरा लाइ ।
सूरत डोरी पोढ़ि करि, पाँच पचीस झुलाइ ॥ २ ॥

---

(१) आनंद ।

दासातन।

सती अगिन की आँच सहि, लोह आँच सहि सूर।
दूलन सत आँचहि सहै, राम भक्त सो पूर ॥ १ ॥
जथाजोग जस चाहिये, सो तैसे फल देइ।
दूलन ऐसे राम के, चरन कँवल रहै सेइ ॥२॥

साधु महिमा।

दुलन साधु सब एक हैं, बाग फूल सम तूल।
कोइ कुदरती सुबास है, और फूल के फूल ॥ १ ॥
जा दिन संत सताइया, ता छिन उलटि खलक[१]।
छत्र खसै धरनी धसै, तीनिउँ लोक गरक्क[२] ॥ २ ॥

फुटकल

भाग बड़े यहि जक्त मा, जेहि के मन बैराग।
विषय भाेग परिहरि दुलन, चरन कमल चित लाग ॥
दूलन पीतम जेहि चहैं, कही सुहागिल ताहि।
आपन आपन भाग है, साझा काहु क नाहिं ॥ २ ॥
जगत मातु बनिता अहै, पूतो जगत जियाव।
निंदन जोग न ये दोऊ, कहि दूलन सत भाव ॥ ३ ॥

---

(१) खलक़=सृष्टि। (२) डूब जाना।

बनिता ऐसी ह्वै बड़ी, देखा यहि संसार।
दूलन बन्दै दुहुन को, झूठे निंदनहार ॥ ४ ॥
दूलन चेला चाम को, आयो पहिरि जहान।
इहाँ कमाई बसि भयो, सहना औ सुलतान ॥ ५ ॥
दूलन छोटे वे बड़े, मुसलमान का हिन्दु।
भूखे देवैं भीरियाँ[१], सेवैं गुरु गोबिन्दु ॥ ६ ॥
भूँखेहि भोजन दिहे भल, प्यासे दीन्हे पानि।
दूलन आये आदरो[२], कहि सु सबद सनमान[२] ॥ ७ ॥
काल कर्म की गम नहीं, नहिं पहुँचै भ्रम थान।
दूलन चरन सरन रहु, छेम कुसल अस्थान ॥ ८ ॥
दूलन यह तन जक्त भा, मन सेवै जगदीस।
जब देख्यो तबही पर्यो, चरनन दीन्हे सीस ॥ ९ ॥
दूलन प्रेम प्रतीत तें, जो बंदै हनुमान।
निसु बासर ता की सदा, सब मुसकिल आसान ॥ १० ॥
दुलन चरन चित लाइ कै, अंतर धरै न ध्यान।
निसुबासर थकि थकि मरै, ना मानी सो आन ॥ ११ ॥
दूलन कथा पुरान सुनि, मते न माते लोग।
वृथा जनम रस भोग बिनु, खोया को संजोग ॥ १२ ॥
बेद पुरान कहा कहेउ, कहा किताब कुरान।
पंडित काजी सत्त कहु, दूलन मन परमान ॥ १३ ॥

(१) छिद्रियाँ। (२) आदर या ख़ातिरदारी।

दुलन प्रीत मरजाद हम, देखा यहि संसार ।
धेला छः दमरी हद, पैसा का ब्योहार ॥ १४ ॥
कतहुँ प्रगट नैनन निकट, कतहूँ दूरि छिपानि ।
दूलन दीनदयाल ज्यों, मालव मारू पानि[1] ॥१५।
दूलन भक्तन के हिसिक, चलै कोऊ संसार ।
भक्तिहीन हिसकन चलै, ता सिर परै खभार[2] ॥ १६ ॥

(१) संस्कृत में "मालव" मालवा देश को कहते हैं जहाँ पानी की बहुतायत है, और मारू मारवाड़ देश का नाम है जहाँ की भूमि बलुई (मरु) है और पानी का अकाल है। (२) दुरावो।

बेलवेडियर प्रेस, कटरा, प्रयाग की पुस्तकें

संतबानी पुस्तकमाला

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब का बीजक	...	...	॥।)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	...	...	१≈)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	...	...	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	...	...	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	...	...	।≈)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	...	...	≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी,रेख़ते और झूलने	...	...	।=)
कबीर साहिब की अखरावती	...	...	≈)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	...	...	॥–)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १		...	१≈)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित		...	१≈)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	...	...	१।–)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	...	...	१॥)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	...	...	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली दूसरा भाग	...	...	१॥)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	...	...	१॥)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	...	...	१।)
सुन्दर बिलास	...	...	१–)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	...	...	॥।)
पलटू साहिब भाग २—रेख़्ते, झूलने, अरिल, कबित्त, सवैया		...	॥।)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	...	...	॥।)
जगजीवन साहिब की बानी, पहला भाग	...	...	॥।–)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	...	...	॥।–)
दूलन दास जी की बानी,	...	...	।)॥

चरनदास जी की बानी, पहला भाग	|||-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	|||)
गरीबदास जी की बानी	१|-)
रैदास जी की बानी	||)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	|≡)||
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी ...	|-)
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी	|≡)
भीखा साहिब की शब्दावली	||=)||
गुलाल साहिब की बानी	|||=)
बाबा मलूकदास जी की बानी	|)||
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	-)
यारी साहिब की रत्नावली	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	|)
केशवदास जी की अमींघूँट	-)||
धरनी दास जी की बानी	|=)
मीराबाई की शब्दावली	||=)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश	|≡)||
दया बाई की बानी	|)
संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी) [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]	१||)
संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]	१||)
	कुल २३||≡)
अहिल्या बाई ...	≡)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

मूल्य केवल ६॥) । इसी असली रामायण का एक सस्ता संस्करण ११ बहुरंगा और ६ रंगीन यानी कुल २० सुन्दर चित्र सहित और सजिल्द १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥) । प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं और इनके काग़ज़ उमदा हैं।

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ॥।=)

विनय कोश—विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है। यह मानस-कोश का भी काम देगा। मूल्य २)

हनुमान बाहुक-प्रति दिन पाठ करने के योग्य, मोटे अक्षरों में शुद्ध छपी है। मूल्य -)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के अन्य ग्यारहों ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे मोटे बड़े अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं। सचित्र व सजिल्द मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है। मूल्य ।=)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूसी उपन्यास है। मूल्य १)

सदेह—यह एक मौलिक क्रांतकारी नया उपन्यास है। बिना जिल्द ॥।) सजिल्द १)

चित्रमाला भाग १—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह तथा परिचय है। मूल्य ॥।)

चित्रमाला भाग २—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है। मूल्य ॥।)

चित्रमाला भाग ३—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है मूल्य १)

चित्रमाला भाग ४—१२ रंगीन सुंदर चित्र तथा चित्र-परिचय है मूल्य १)

गुटका रामायण—यह असली तुलसीकृत रामायण अत्यन्त शुद्धता पूर्वक छोटे रूप में है। पृष्ठ संख्या लगभग ४५० के है। इसमें अति सुन्दर ८ बहुरंगे और ५ रंगीन चित्र हैं। तेरहो चित्र अत्यन्त भावपूर्ण और मनमोहक हैं। रामायण प्रेमियों के लिये यह रामायण अपूर्व और लाभदायक है। जिल्द बहुत सुन्दर और मज़बूत तथा सुनहरी है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥)

घोंघा गुरू की कथा—इस देश में घोंघा गुरू की हास्यपूर्ण कहानियाँ बड़ी ही प्रचलित हैं। उन्हीं का यह संग्रह है। शिक्षा लीजिए और ख़ूब हँसिए। ।)

गल्प पुष्पाञ्जलि—इसमें बड़ी उमदा उमदा गल्पों का संग्रह है। पुस्तक सचित्र और दिलचस्प है। दाम ॥=)

हिन्दी साहित्य सुमन— दाम ॥)

सावित्री और गायत्री—यह उपन्यास सब प्रकार की घरेलू शिक्षा देगा और रोज़ाना व्योहार में आने वाली बातें बतावेगा। अवश्य पढ़िये। जी ख़ूब लगेगा। दाम ॥)

फ्राँस की राज्य क्राँति का इतिहास मूल्य ।=)

हिन्दी साहित्य सरोज—तीसरी और चौथी कक्षा के लिए। मूल्य ॥-)॥

हिन्दी साहित्य रत्न—(७ वीं कक्षा के लिए) मूल्य ॥)

हिन्दी साहित्य भूषण—तीसरी और चौथी कक्षा के लिए। मूल्य ।=)

बाल शिक्षा भाग १—बालकों के लिए बड़े बड़े हर्फ़ों में सचित्र रंगीन चित्र सहित शिक्षा भरी पड़ी है। मूल्य ।)

बाल शिक्षा भाग २—उसी का दूसरा भाग है। यह भी सचित्र और सुन्दर छपी है ।-)

बाल शिक्षा भाग ३—यह तीसरा भाग तो पहले दोनों भागों से सुन्दर है और फिर सचित्र छपा भी है। लड़के लोट पोट हो जायँगे। मूल्य ॥)

[भार]त की सती स्त्रियाँ—हमारी सती स्त्रियों की संसार में बड़ी महिमा है। इसमें २६ सती स्त्रियों का जीवन-चरित्र है। और कई रंग बिरंगे चित्र हैं। पुस्तक सचित्र साफ़ सुथरी है। मूल्य १)

सचित्र बाल बिहार—लड़कों के लायक सचित्र पद्यों में छपी है दाम =)

दो वीर बालक—यह सचित्र पुस्तक वीर बालक इलावंत और बभ्रुवाहन के जीवन का वृत्तांत है। पुस्तक बड़ी सुन्दर और सरल है। दाम ।≡)

नल-दमयन्ती (सचित्र) दाम ॥-)

प्रेम परिणाम—प्रेम सम्बन्धी अनूठा उपन्यास दाम ।॥)

योरप की लड़ाई—गत यूरोपीय महायुद्ध का रोमांचकारी वृत्तांत दाम ।-)

समाज-चित्र (नाटक)—सचित्र आज कल के समाज के कुप्रथाओं का जीता-जागता उदाहरण सम्मुख आ जाता है। सचित्र दाम ।॥)

पृथ्वीराज चौहान (ऐतिहासिक नाटक) ६ रंगीन और २ बहुरंगे कुल ८ चित्र हैं। नाटक रंग मंच पर खेलने योग्य है। पढ़ने में जी ख़ूब लगने के अलावा अपूर्व वीरता की शिक्षा भी मिलती है। १)

सती सीता—सीता जी के अपूर्व चरित्रों का सरल हिन्दी में वृत्तांत। ॥=)

भारत के वीर पुरुष—प्रत्येक भारतीय वीर पुरुषों की जीवनी बड़े रोचक ढंग से लिखी है। पुस्तक पढ़ कर प्रत्येक भारतीय वीर बन सकता है। १)

भक्त प्रह्लाद (नाटक) ।=)

स्कंद गुप्त (नाटक) छप रहा है—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।